प्रकाशन तिथि : 01 सितम्बर, 2023
प्रेषण तिथि : 04 सितम्बर, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 12 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

देश की एकता के लिए था दुगार्दास जी का संघर्ष: संरक्षक श्री

(पूरे देश में कृतज्ञतापूर्वक मनाई गई आंग्ल तिथि अनुसार राष्ट्रनायक दुगार्दास राठौड़ की जयंती)

दुगार्दास जी ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने पूरे देश को एक करने के लिए 35 वर्ष तक संघर्ष किया। लेकिन उनके प्रयासों को आज हम भुला चुके हैं। हम तो परिवार में ही एक नहीं है। आज परिवार टूट रहे हैं, समाज टूट रहा है, देश टूट रहा है, मानवता टूट रही है। इसको विहंगम दृष्टि से देखने और इस बिखराव को रोकने का उपाय हमको करना चाहिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक ऐसा ही प्रयास है। दुगार्दास जी के ऊपर लिखने वाले राजपूतों से कहीं अधिक दूसरी जातियों के लोग हैं। अंग्रेजों ने भी उनके बारे में कई पुस्तकों में लिखा है। उनको पढ़ने से पता चलता है कि दुगार्दास जी की विलक्षणता क्या थी। वे कहीं के राजा तो क्या, जागीरदार भी नहीं थे फिर भी जोधपुर के लिए जो उन्होंने त्याग किया वह अतुलनीय है। उनको अपने पक्ष में करने के लिए बादशाह ने अनेकों प्रलोभन दिए लेकिन उन्होंने सब ठुकरा दिए। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने 13 अगस्त को नागौर जिले में खींवसर स्थित श्री दुगार्दास राजपूत छात्रावास में आयोजित दुगार्दास राठौड़ जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि कल मैंने यहां आते हुए मार्ग में सिवाना में उन छप्पन की पहाड़ियों को देखा जो दुगार्दास जी की क्रीडास्थली थी। वहां हमने भी क्रीडा की है, वहां श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर लगे हैं। उनका पीछा करने वाले मुगल बादशाह औरंगजेब ने उन्हें पकड़ने का बहुत प्रयत्न किया। वह इसी तरह से शिवाजी व शंभाजी को पकड़ने की भी कोशिश कर रहा था। एक बार औरंगजेब ने एक टिप्पणी की कि इस पहाड़ी चूहे (शंभाजी) को तो मैं कभी भी पकड़ सकता हूं। लेकिन इस मारवाड़ी कुत्ते (दुगार्दास जी) ने मेरी नाक में दम कर रखा है। उसे यह क्यों कहना पड़ा? दुगार्दास जी की स्वामिभक्ति के कारण, उनके स्वतंत्रता प्रेमी होने के कारण और उनकी संघर्षपूर्ण चतुराई के कारण उसने ऐसा कहा। लेकिन उस संघर्ष का प्रतिफल दुगार्दास जी को जो मिला, वह दुखद था। जिस घराने की उन्होंने रक्षा की, मुगल बादशाह की योजना को विफल करके जोधपुर के उत्तराधिकारी अजीतसिंह को बचाकर ले आए, उन्हीं के कारण उन्हें मारवाड़ छोड़ना पड़ा। युद्ध बहुत हुए हैं, वीर भी बहुत हुए हैं लेकिन दुगार्दास जी की तरह से निस्वार्थ भाव से संघर्ष करने वाले बहुत कम होते हैं। संरक्षक श्री ने पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह हेतु सभी को दिल्ली आने का निमंत्रण भी दिया। अपने स्वागत उद्बोधन में गजेंद्र सिंह खींवसर ने वीर दुर्गा दास जी को नमन करते हुए सभी से उनके पदचिह्नों पर चलते हुए सभी जाति व धर्म के लोगो से मिलकर चलने का आह्वान किया और बताया कि ये हमारी सदियों से चली आ रही परंपरा है। समता राम महाराज, पांचलासिद्धा के महंत सूरजनाथ जी, भरतपुर के पूर्व राजघराने के सदस्य अनिरुद्ध, धंनजय सिंह खींवसर, दुर्ग सिंह चौहान, भंवर सिंह मकौडी, मेघराज सिंह रॉयल, खेम सिंह ढुंढिया, मृगेशा कुमारी, अभिमन्यु सिंह राजवी, कुंप सिंह पातावत, रवींद्र सिंह, मोती सिंह, पदम सिंह हिंगोनिया, हनुमान सिंह सरासनी, महिपाल सिंह मकराना, हनुमान सिह खांगटा, कर्नल केसरी सिंह, अजीत सिंह भाटी, किशोर सिंह बालवा, छात्रावास कमेटी के अध्यक्ष हरि सिंह जोधा, उम्मेद सिंह खींवसर आदि अनेकों गणमान्य समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे एवं संबोधित किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा व नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

इतिहास को सहेजने के लिए अपनी उपयोगिता सिद्ध करें: संघप्रमुख श्री

(बघेरा में समारोहपूर्वक मनाई राव चंद्रसेन की जयंती)

यदि हम हमारी किसी कीमती वस्तु को अनदेखा और असुरक्षित छोड़ देंगे तो यह निश्चित है कि दूसरे उसको चोरी कर लेंगे। हमारे इतिहास के साथ आज यही हो रहा है। हमने हमारे महापुरुषों को, हमारे बहुमूल्य इतिहास को उपेक्षित कर दिया, उसी का परिणाम है कि दूसरे लोग उन पर अपना दावा करने लग गए। इसलिए आज हमें जागने की आवश्यकता है, अपने इतिहास को सहेजने की आवश्यकता है। इतिहास को सहेजने का सही तरीका उस पर केवल गर्व करना नहीं है बल्कि हमारे ऐतिहासिक महापुरुषों से प्रेरणा लेकर उन्हीं के जैसे कृत्य करके अपनी उपयोगिता को सिद्ध करना है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पूर्वजों सा सम्मान पाने के लिए पूर्वजों से गुण धारण करें: सरवड़ी

(रतनगढ़ में श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा राजनीतिक व सामाजिक कार्यकताओं का स्नेहमिलन संपन्न)

हमें यदि हमारे पूर्वजों की तरह मान सम्मान पाना है तो हमें पूर्वजो के संस्कार और क्षत्रियोचित गुणों का भी सृजन करना होगा। बिना उन गुणों को धारण किए हम वो मान सम्मान प्राप्त नही कर सकते। आज हमारे विरुद्ध लोगों को बहकाने वाले अनेक तत्व सक्रिय हैं और ऐसा करके वे हमें कमजोर करना चाहते हैं। उनके इन प्रयासों को विफल करने के लिए हमें सभी के साथ आत्मीय व्यवहार करना होगा। हमारा व्यक्तित्व इस प्रकार का होना चाहिये कि सर्वसमाज के लोग हमें अपना नेता स्वीकार करें। सबको साथ लेकर ही हम लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्थापित हो सकते हैं। उपर्युक्त बात श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 20 अगस्त को माहेश्वरी भवन, रतनगढ़ (चुरू) में आयोजित रतनगढ़ विधानसभा क्षेत्र के राजपूत समाज के राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकताओं के स्नेहमिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में सभी को साथ लेकर चलने वाले की जीत होती है और सभी को साथ लेकर चलने के लिए हमें सभी का सम्मान करना सीखना होगा।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

देश की एकता के लिए था दुगार्दास जी का संघर्ष: संरक्षक श्री

शिवरती

श्री डूंगरगढ़

(पेज एक से लगातार)

13 अगस्त को राष्ट्रनायक दुगार्दास राठौड़ की जयंती पर देशभर में कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें देशवासियों ने उदात्त क्षत्रिय चरित्र को धारण करने वाले अपने नायक के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। डीडवाना स्थित श्री हिम्मत राजपूत छात्रावास में भी समारोहपूर्वक जयंती मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने दुगार्दास जी का जीवन चरित्र बताते हुए कहा कि दुगार्दास जी का जन्म राव रणमल जी के पुत्र करण के वंशज के रूप में आसकरण जी के घर में हुआ। दुगार्दास जी का जीवन 80 वर्ष 3 महीने और 9 दिन का रहा और उन्होंने अपना पूरा जीवन क्षात्रधर्म का पालन करते हुए बिताया। 17 वर्ष की उम्र तक वे सालवा गांव में रहे। उसके बाद राइके वाली घटना के कारण वे जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह जी के संपर्क में आए और उन्होंने दुगार्दास जी को सदैव के लिए अपने साथ रख लिया। 3 वर्ष बाद धरमत का युद्ध हुआ जिसमें दुगार्दास जी इतनी वीरता से लड़े कि उन्हें उस युद्ध में सात घोड़े बदलने पड़े। उनकी इस वीरता से जसवंत सिंह जी अत्यधिक प्रभावित हुए। जब महाराजा जसवंत सिंह जी की अफगानिस्तान में मृत्यु हुई तब मुल्तान से उनके परिवार को वापिस जोधपुर लाना था लेकिन बादशाह की फौज द्वारा अटक नदी पर उन्हें रोका गया और जसवंत सिंह जी के पुत्र अजीत सिंह को कैद करने का प्रयास किया गया लेकिन दुगार्दास जी ने इस प्रयास को विफल किया और दिल्ली पहुंचे। यहां रूपनगढ़ की हवेली में उन्हें फिर से घेरा गया लेकिन यहां से भी लड़ते हुए दुगार्दास जी ने अजीत सिंह जी को निकालकर जोधपुर पहुंचाया। इसके बाद इन कठिन परिस्थितियों में अजीत सिंह के लालन पालन, उनकी सुरक्षा और मारवाड़ की सेना को सुदृढ़ करने का दायित्व दुगार्दास जी ने संभाला। मारवाड़ पर कब्जा करने के औरंगजेब के सारे प्रयास दुगार्दास जी विफल करते रहे। यही नहीं, दुगार्दास जी ने औरंगजेब के पुत्र अकबर को भी अपनी ओर मिला लिया। अकबर को लेकर वे महाराष्ट्र में संभाजी के पास भी पहुंचे। वहां से अपेक्षित सहयोग न मिलने पर अकबर ने ईरान जाने का निश्चय किया और अपने बच्चों को उसने दुगार्दास जी के संरक्षण में छोड़ा। दुगार्दास जी ने अकबर के बच्चों को बाड़मेर में सुरक्षित रखा और उनके लिए कुरान की शिक्षा की भी व्यवस्था की। ऐसा उनका अद्भुत चरित्र था। दुगार्दास जी का ऐसा शौर्य था कि उनके नाम से ही शत्रु भयभीत हो जाते थे। उनकी चतुराई और दक्षता ने ही मारवाड़ को इतने लंबे समय तक सुरक्षित रखा। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्र बहादुरशाह ने जोधपुर पर कब्जा किया लेकिन जब वह दक्षिण में गया तो दुगार्दास जी ने पुनः जोधपुर को मुक्त करा लिया और अजीत सिंह जी को गद्दी पर स्थापित किया। अजीत सिंह जी के राजा बनने के बाद कुछ चाटुकार दरबारियों द्वारा उन्हें दुगार्दास जी के विरुद्ध भड़काया गया। ऐसी स्थिति में दुगार्दास जी ने राज्य को अंतर्कलह से बचाने के लिए जोधपुर छोड़ने का निश्चय कर लिया और मेवाड़ चले गए। यहां रहते हुए उन्होंने मेवाड़ को सुरक्षित करने का कार्य किया। अपने अंतिम समय में वे उज्जैन चले गए और वहीं क्षिप्रा के तीर पर अंतिम सांस ली जहां उनकी समाधि भी बनी हुई है। उस समाधि पर श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर भी लग चुके हैं, स्नेहमिलन आदि कार्यक्रम भी हुए हैं। उन्होंने कहा कि दुगार्दास जी के चरित्र में गीता में वर्णित क्षत्रिय के सातों गुण विद्यमान थे इसीलिए हम आज उनकी जयंती मना रहे हैं। हम उनके आदर्श के पूजक हैं लेकिन क्या यह पर्याप्त है? क्या दुगार्दास जी की तरह हम कष्ट सहन कर सकते हैं, उनकी तरह संघर्षपूर्ण साधना कर सकते हैं? यह आज समाज की आवश्यकता है। हम अपने आप को मजबूत बनाएं, अपनी दुष्प्रवृत्तियों के समाप्त कर दें तो हम भी दुगार्दास बन सकते हैं। जैसे उन्होंने अजीत सिंह जी के लिए संघर्ष किया वैसा ही संघर्ष हमें समाज के लिए करने की आवश्यकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ वैसी ही साधना कर रहा है जिसके माध्यम से हम सच्चे क्षत्रिय बन सकते हैं। यही दुगार्दास जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि प्रत्येक समाज को अपना इतिहास संजोकर रखना होता है। जो समाज ऐसा नहीं कर पाता वह जमाने द्वारा भुला दिया जाता है। उन्होंने कहा कि इतिहास से दुगार्दास जी जैसे वीरों के जीवन से प्रेरणा लेकर ही समाज अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है। छात्रावास प्रबंधक समिति के अध्यक्ष रघुवीर सिंह चौमू ने बताया कि कार्यक्रम स्वामी सोमेश्वर गिरी व महंत केशवदास के सान्निध्य में संपन्न हुआ जिसमें पूर्व विधायक मानसिंह किनसरिया, श्रवण सिंह बगड़ी, आजाद सिंह बाड़मेर, आशु सिंह लाछड़ी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। डॉ. गजदान चारण ने कार्यक्रम का संचालन किया। 13 अगस्त को प्रातः 10 बजे भीलवाड़ा जिले के शिवरती में माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में जयंती मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ दुगार्दास जी के मार्ग पर चलकर उन्हीं के जैसे व्यक्तित्वों के निर्माण का कार्य कर रहा है। दुगार्दास जी का जीवन एक दृढ़ संकल्पित और दृढ़ प्रतिज्ञित जीवन है। उनके व्यक्तित्व को केवल स्वामिभक्ति तक सीमित करना सही नहीं है। वे केवल वीर और स्वामिभक्त ही नहीं बल्कि एक सच्चे राष्ट्रनायक थे। उन्होंने केवल मारवाड़ की सेवा नहीं की बल्कि मेवाड़, मालवा, महाराष्ट्र सहित अनेक स्थानों पर रहते हुए क्षत्रिय धर्म का पालन किया। हमारे शत्रुओं ने सदैव हमें आपस में लड़ाकर हमारी फूट का लाभ उठाया। लेकिन दुगार्दास जी ने पहली बार शत्रु में आपसी फुट पैदा कर अपनी मातृभूमि की रक्षा की। उन्होंने औरंगजेब के पुत्र को ही उसके विरुद्ध खड़ा कर दिया, ये दुगार्दास जी की चतुराई और कूटनीति को दिखाता है। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में माता अपनी संतान को पालने में झुलाते हुए ही स्वाभिमान, वीरता, बलिदान, त्याग और राष्ट्रप्रेम की शिक्षा दिया करती थी।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

राजलदेसर

सीकर

भिंयाड़

संघशक्ति

सोनगढ़, चापलधरा और पुणे में शिविर संपन्न, 500 शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

13 से 16 अगस्त की अवधि में श्री क्षत्रिय युवक संघ के तीन प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सोनगढ़, चापलधरा और पुणे में आयोजित हुए जिनमें 500 से अधिक युवाओं ने संघ का प्राथमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। गोहिलवाड़ संभाग के खोडियार प्रांत में सोनगढ़ स्थित गुरुकुल में बालकों का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 13 से 15 अगस्त तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए शिविर संचालक धर्मेंद्र सिंह आंबली ने शिविरार्थियों से कहा कि जिस प्रकार भेड़ों के साथ पलकर सिंह शावक द्वारा अपने स्वरूप को भूल जाने की कहानी हमने सुनी है, वैसी ही स्थिति आज हमारे साथ भी है। हम भी अपने वास्तविक स्वरूप को जमाने के प्रभाव में आकर भूल चुके हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें अपनी वही खोई हुई पहचान याद दिला रहा है। उन्होंने विदाई के समय यहां मिली सीख को सदैव याद रखने और अपने दुगुर्णों को त्यागकर सद्गुणों को अपनाने की बात कही। शिविर में भक्तिनगर, तक्षशिला, पटेल नगर शाखा, अवाणीया, मोरचंद, थलसर, खडसलिया, कनाड, सोनगढ, अमरगढ, आंबला, पांचवडा, काटोडिया आदि गांवों से 191 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। व्यवस्था का जिम्मा दीपक सिंह राणा (हरियाणा), युवराज सिंह, जगतसिंह ने सोनगढ़ के राजपूत युवाओं के साथ मिलकर संभाला। छनूभा पच्छेगाम

सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। शिविर के दौरान वीर दुगार्दास राठौड़ की जयंती भी मनाई गई। सूरत प्रांत के नवसारी के चापलधरा स्थित श्री चंद्रकिशोर राजपूत भवन में श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 13 से 16 अगस्त तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन दिग्विजयसिंह पलवाड़ा ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि जिस प्रकार एक भरे हुए घड़े में और अधिक जल नहीं भरा जा सकता, उसी प्रकार यदि हमारा व्यक्तित्व भी पहले से भरा हुआ है तो उसमें संघ द्वारा दिया जा रहा शिक्षण नहीं उतर सकता। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने व्यक्तित्व रूपी घड़े में से दुगुर्णों को बाहर निकालें जिससे संघ द्वारा अभ्यास कराए जा रहे सद्गुणों को उसमें स्थान मिल सके। शिविर में सूरत में निवासरत राजस्थान, उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश के प्रवासी राजपूत युवकों सहित स्थानीय चलथान, डाम्बा, खानपुर, जोलवा आदि गांवों से 172 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में वरिष्ठ स्वयंसेवक पाबूदानसिंह दौलतपूरा व प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। चापलधरा के केतनसिंह, सुभाषसिंह, कृपालसिंह, सुरेंद्रसिंह, कुणाल सिंह, शक्ति सिंह आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। महाराष्ट्र संभाग में पुणे स्थित साल्वे गार्डन में भी 13 से 15 अगस्त तक एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन अशोक सिंह धोलेरा ने किया। उन्होंने शिविर समापन के समय शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि समाज के प्रति हमारा अपनत्व का भाव ही हमें इस शिविर में खींचकर लाया है। इस भाव को कर्म में बदलने का मार्ग हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ दिखाता है। उन्होंने दिल्ली में आयोजित होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जन्मशताब्दी समारोह में अपने साथियों सहित अधिकाधिक संख्या में पहुंचने की भी बात कही। शिविर में पुणे, मुम्बई, हैदराबाद व विजयवाडा के 145 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विशेष शाखाओं का आयोजन

पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन शिशवी (देलवाडा, नाथद्वारा) में 13 अगस्त को किया गया। मेवाड़ वागड़ संभागप्रमुख भंवर सिंह बेमला ने संघ के बारे में विस्तार से बताया और दिल्ली में आयोजित होने वाले जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। फतह सिंह भटवाडा, मोहब्बत सिंह भैंसाणा सहित शिशवी, सोडावास, झाडसादडी गाँवों के समाजबंधुओं की कार्यक्रम में उपस्थिति रही। केकड़ी जिले के पिपलाज स्थित बायण माता मन्दिर में भी 20 अगस्त को विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन किया गया। चितौड़गढ़ जिले में 20 अगस्त को चामुंडा (मुंडाड़ा) माताजी मंदिर परिसर नरधारी तथा सीताराम जी मंदिर परिसर भीमपुरिया में विशेष

शाखाएं आयोजित की गई। नरधारी शाखा में नरेंद्र सिंह नरधारी ने संघ का परिचय दिया। दिलीप सिंह रूद ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषंगिक संगठनों की जानकारी दी। पूर्व प्रधान गोविंद सिंह नरधारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कान सिंह नरधारी, सूर्यकरण सिंह आकोलागढ़, नरेंद्र सिंह लाखा का खेड़ा सहित अनेकों समाजबंधु मातृशक्ति सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भीमपुरिया में आयोजित कार्यक्रम में जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा, चंद्रवीर सिंह साजियाली, विक्रम सिंह झालरा, धर्मवीर सिंह नरेड़ी व अन्य सहयोगी उपस्थित रहे। 24 अगस्त को नेतावल खेड़ा (चितौड़गढ़) में आयोजित शाखा स्तरीय कार्यक्रम में केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह सजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

आलोक आश्रम और संघशक्ति में मनाया स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त को देश का स्वतंत्रता दिवस बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम एवं जयपुर स्थित संघशक्ति कार्यालय में ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के साथ मनाया गया। आलोक आश्रम में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस दौरान बाड़मेर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक उपस्थित रहे। संघशक्ति, जयपुर में माननीय संघ प्रमुख लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। जयपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त भी संघ के विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों में स्थानीय स्वयंसेवकों द्वारा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया।

रसीदपुरा (लाडनूं) में स्नेहमिलन का आयोजन

श्री साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में 20 अगस्त को लाडनूं प्रांत के रसीदपुरा में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नागौर संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा के निर्देशन में यज्ञ के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवत सिंह सिंघाना ने सभी को दिल्ली में होने वाले जन्म शताब्दी समारोह हेतु आमंत्रित करते हुए कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने अपना जीवन समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित किया था। आजादी के आन्दोलन के दौरान जब पूरा देश एक

नई अंगड़ाई ले रहा था तब उन्होंने हमारे समाज के भविष्य को देखते हुए एक ऐसा मार्ग प्रशस्त किया जो शताब्दियों तक चलने वाला और समाज और राष्ट्र की सेवा करते हुए परमेश्वर तक पहुंचने का मार्ग है। लाडनूं प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी ने कहा कि हमारे समाज में भगवान राम से लेकर पूज्य तन सिंह जी तक महापुरुषों की एक अनवरत श्रृंखला है जो कि अभी भी जारी है। हमें इनके जीवन से प्रेरणा लेकर उनके आदर्शों का व्यावहारिक जीवन में प्रतिपादन करने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में पूर्व सरपंच कैप्टन नंदसिंह, राजेंद्र सिंह और मनोहरसिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

जयपुर में व्यापार मंडलों के राजपूत पदाधिकारियों की बैठक संपन्न

जयपुर स्थित संघशक्ति कार्यालय में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा जयपुर व्यापार मंडल के अंतर्गत आने वाले स्थानीय व्यापार मंडलों के पदाधिकारियों की एक बैठक 9 अगस्त को आयोजित की गई। जयपुर में निवासरत व्यापार करने वाले समाजबंधुओं को आपसी सहयोग व समन्वय द्वारा प्रगति करने व संगठित होकर समाज को मजबूती प्रदान करने हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से इस बैठक का आयोजन किया गया। चर्चा के दौरान बैठक में उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने आपसी सहयोग को बढ़ाने हेतु ऐसी बैठकों के निरंतर आयोजन पर सहमति जताई एवं अन्य साथियों को भी इस मुहिम में शामिल करने के लिए मिलकर कार्य करने की बात कही। इसके लिए 30 अगस्त तक अधिक से अधिक संख्या में समाज के व्यापारियों को संघठन से जोड़ने का निर्णय लेकर दायित्व सौंपे गए ताकि सितम्बर में बड़ी बैठक का आयोजन किया जा सके।

संपादकीय

निंदक, आलोचक और साथी

निंदक, आलोचक और साथी - इन तीनों भूमिकाओं की हमारे जीवन में उपस्थिति रहती है। हमारे आसपास के व्यक्ति हमारे प्रति इनमें से कोई न कोई भूमिका निभाते हैं तो हम स्वयं भी अन्यों के प्रति इनमें से किसी न किसी भूमिका को अंगीकार करते और उसका निर्वहन करते ही हैं। उक्त दोनों दृष्टिकोण से इन भूमिकाओं को समझना हमारे आत्मचिंतन और मार्ग-निर्धारण के लिए उपयोगी और आवश्यक है। सर्वप्रथम हम निंदक के व्यक्तित्व का विश्लेषण करें तो पाएंगे कि निंदक नकारात्मकता, अहंकार और हीनभावना का मिश्रण होता है और उसकी यह प्रवृत्तियां ही निंदा के रूप में प्रकट होती हैं। निंदा चूंकि नकारात्मकता की प्रतिनिधि है इसलिए उसमें स्वयं की कोई शक्ति नहीं होती। इस बलहीनता के कारण ही निंदक सदैव पृष्ठ द्वारों से निंदा किया करता है, ऐसे मंचो का प्रयोग करता है जहां वह अपने कृत्यों के परिणामों से सुरक्षित रह सके और ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास करता है जिसमें उसके स्तर पर उतरकर, उसकी तरह नकारात्मक होकर ही उसको उत्तर दिया जा सके। ऐसा करके वह नकारात्मकता को अपने चारों ओर फैलाकर अपनी रक्षा का उपाय करता है। वर्तमान में सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्म ऐसे व्यक्तियों के लिए अपनी नकारात्मकता के प्रसार के महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध हो रहे हैं। किसी को गलत कहना सरलतम कार्य है, वही कार्य निंदक करता है। निंदक बनना वास्तव में एक अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है जिसमें व्यक्ति दूसरों को गलत सिद्ध करके अपने को सही सिद्ध करने का कुकृत्य करता है और ऐसा करके अपने विकास की सारी संभावनाओं को स्वयं ही बंद कर देता है। इसलिए यदि हमारे व्यक्तित्व में निंदक का कोई भी अंश स्थान बना रहा है तो उसके प्रति सावधान होना आवश्यक है। किसी भी स्थिति में परछिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति द्वारा हम दूसरों के लिए बाधा तो पैदा कर सकते हैं पर स्वयं के विकास में कोई सहायता इससे नहीं मिलती, केवल हमारा अहंकार ही इससे तुष्टि पाता है। निंदक होने से अधिक निंदनीय कुछ भी नहीं है, इसे स्मरण रखें। लेकिन यदि कोई हमारे प्रति निंदक की भूमिका निभाता है, हमें अपनी निंदा का केंद्र बनाता है तो उसकी निंदा का प्रत्युत्तर कभी भी ना तो प्रतिनिंदा से दिया जाना चाहिए, न ही किसी प्रकार के स्पष्टीकरण से दिया जाना चाहिए। निंदक के प्रति संपूर्ण उपेक्षा ही उसका सटीक प्रत्युत्तर है और अपने विकास के लिए प्रयासरत व्यक्ति को तो ऐसी निंदा को अपनी सहनशक्ति की परीक्षा करने और उसे बढ़ाने का अवसर ही समझना चाहिए।

दूसरी स्थिति आलोचक की है। आलोचना का अर्थ है कि हमें किसी अन्य व्यक्ति अथवा संस्था आदि द्वारा किया जा रहा कोई कार्य ठीक नहीं लगता और हम उसे और अधिक ठीक तरह से कर सकते हैं अथवा उससे श्रेष्ठ कोई अन्य कार्य कर सकते हैं इसलिए उस कार्य की या उसे करने वालों की आलोचना करते हैं। आलोचना का यह स्वरूप वास्तव में वर्तमान स्थिति से असहमति और उसे श्रेष्ठतर बनाने के संकल्प का प्रतिनिधित्व करता है। इस रूप में आलोचना कोई बुरी वस्तु नहीं बल्कि निरंतर विकास के लिए एक उत्प्रेरक का कार्य करने वाली सिद्ध होती है। सच्चा ज्ञान गत्यात्मक होता है और जड़ता इस गति को रोकती है। ऐसी जड़ता का शिकार होने से बचने के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण सहायता करता है, इसमें भी कोई संदेह नहीं। अतः व्यक्ति में ईमानदारी भरा आलोचनात्मक दृष्टिकोण होना उसके व्यक्तित्व को अधिक व्यावहारिक बनाने में सहयोगी हो सकता है। लेकिन इसमें मुख्य बात ईमानदारी की है और यहीं से समस्या पैदा होती है। आज के समय में हर निंदक आलोचक का ही लबादा पहने रहता है जिससे वह अपनी नकारात्मकता और कायरता को आलोचनात्मक दृष्टिकोण के नाम पर छिपा सके। ऐसे में इस बेईमानी को पहचानना आवश्यक है। स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि आलोचक और निंदक में अंतर क्या है और उन्हें कैसे पहचानें? इनमें पहला अंतर है कटुता का। निंदक का व्यवहार कटुता से भरा होता है क्योंकि उसके विरोध का लक्ष्य अपने अहंकार को तुष्ट करना होता है, जबकि आलोचक के लिए असहमति की अभिव्यक्ति ही मुख्य बात होती है और उसमें कटुता की कोई आवश्यकता नहीं होती। दूसरा और प्रधान अंतर यह है कि सच्चा आलोचक आलोचना के साथ ही सदैव वैकल्पिक मार्ग भी प्रस्तुत करता है और उस वैकल्पिक मार्ग पर दूसरों को चलने का आग्रह करने की अपेक्षा स्वयं उस मार्ग पर चलना अधिक उपयुक्त समझता है। दूसरी ओर निंदक केवल विपक्षी व्यक्ति, संस्था अथवा मार्ग को गलत ठहराने पर ही जोर देता है और कोई वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत नहीं करता और यदि करता भी है तो जिनका वह विरोध करता है उन्हीं से उस मार्ग पर चलने की अव्यावहारिक अपेक्षा करता है और स्वयं केवल निंदा करने तक सीमित रहना चाहता है। इन आधारों पर हम आलोचक और निंदक की पहचान कर सकते हैं। इसलिए यदि हमें आलोचक की भूमिका निभानी ही है तो हमें पूर्ण ईमानदारी से अपने द्वारा प्रतिपादित वैकल्पिक मार्ग पर संपूर्ण निष्ठा से चलना प्रारंभ कर देना चाहिए बनिस्बत कि हम दूसरों को उनके मार्ग पर बढ़ने से रोकने में अपनी ऊर्जा व्यर्थ खर्च करें। वहीं, यदि कोई हमारी या हमारे मार्ग की आलोचना करता है, उससे असहमति जताता है तो हमें केवल यही देखना चाहिए कि उसकी आलोचना में क्या कोई ऐसी बात है जिससे हमारे मार्ग को अधिक सुगम बनाने में सहायता मिलती हो तो ऐसी बात को ग्रहण कर शेष आलोचना व आलोचक से निरपेक्ष भाव ही रखना चाहिए।

तीसरी भूमिका है साथी की, सहयोगी की। यह सबसे महत्वपूर्ण व श्रेष्ठतम भूमिका है। महत्वपूर्ण इसलिए कि संसार में कोई भी महत्कार्य सामूहिक शक्ति से ही सिद्ध हो सकता है और बिना साथी बने सामूहिक शक्ति का निर्माण नहीं हो सकता। श्रेष्ठतम इसलिए कि स्वयं के विकास का भी सरलतम मार्ग विकासपथ पर गतिमान व्यक्ति का साथी बनना ही है। व्यक्ति के विकास में सबसे बड़ी बाधा अहंकार ही है और अहंकार को मिटाए बिना साथी बनना संभव नहीं है। निंदक बनना सरल है, आलोचक बनने के लिए भी केवल तर्कबुद्धि का होना पर्याप्त है लेकिन साथी बनना, सहयोगी बनना बहुत कठिन है। साथी बनना केवल तर्क की बात नहीं, यह जीवन के गहनतम विश्वास की अभिव्यक्ति है और इसी विश्वास के कारण एक योद्धा जाति के रूप में हम साथी बनकर लड़ते आए हैं, साथ मरते आए हैं। निंदकों और आलोचकों से कभी कोई संगठन नहीं बना, केवल साथियों से ही संगठन बना करता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी इसीलिए हमें और कुछ नहीं बल्कि साथी बनाने की ही प्रक्रिया है। साथी बनने के लिए साहस की आवश्यकता होती है और साथ को निभाने के लिए त्याग की। जिनमें यह साहस और त्याग की क्षमता नहीं होती वे ही निंदक और आलोचक बनने का मार्ग चुनते हैं। लेकिन साहसी और त्यागी व्यक्ति साथी बनने का मार्ग चुनते हैं। आएं, हम भी श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा दिखाए जा रहे इस मार्ग को चुनें, क्योंकि हमारे साथी बनने में ही सामाजिक एकता का बीजारोपण है, उसी में हमारे उच्चतम विकास की संभावनाएं भी हैं और उसी में समस्त निंदाओं और आलोचनाओं का उत्तर भी है।

वीर बिंकासी जुझार की जयंती की तैयारियों हेतु बैठक का आयोजन

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 24 सितंबर को जैसलमेर के सोनू में आयोजित होने जा रहे वीर बिंकासी जुझार के जयंती समारोह की तैयारियों हेतु एक बैठक सोनू स्थित बिंकासी मंदिर परिसर में हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जैसलमेर संभाग प्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली व वरिष्ठ स्वयंसेवक जितेंद्र सिंह पारेवर सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। बैठक के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में कार्यक्रम के प्रचार प्रसार हेतु दलों का गठन किया गया। समारोह की तैयारियों हेतु विभिन्न जिम्मेदारियां भी सौंपी गई। जयसिंह, कैप्टन तनेराव सिंह, तुलछसिंह, झबर सिंह, डूंगर सिंह, चतर सिंह, लाल सिंह सहित समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर कार्यक्रम को सफल बनाने का दायित्व लिया।

मातेश्वरी विद्या मंदिर भिंयाड़ को मिला नेशनल अवार्ड

मातेश्वरी विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय भिंयाड़ को साँस्कृतिक गतिविधियों में अव्वल रहने पर नई दिल्ली में नेशनल स्कूल अवार्डस (एनएसए) द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने वाले सर्वश्रेष्ठ विद्यालय - 2023 के रूप में सम्मानित किया गया है। यह विद्यालय श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक राजेंद्र सिंह भिंयाड़ द्वितीय द्वारा संचालित किया जा रहा है।

रामसेतु निर्माण के संकल्प के साथ 11000 किमी की साइकिल यात्रा

गुजरात के बनासकांठा जिले की नारोली तहसील के थराद गांव के निवासी 22 वर्षीय युवक जनक सिंह द्वारा रामसेतु पुनर्निर्माण के संकल्प को लेकर 12 ज्योतिर्लिंग और चार धाम की लगभग 11000 किमी की यात्रा साइकिल द्वारा की जा रही है। यात्रा के दौरान बेंगलुरु पहुंचने पर श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थानीय चामुंडा माता मंदिर शाखा के स्वयंसेवकों ने उनसे भेंट की तथा एक मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया। रामसिंह संग्राम सिंह की ढाणी व सोहन सिंह नीमलाना ने अपने विचार रखते हुए जनक सिंह की संकल्पशक्ति की सराहना की, साथ ही पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में भी जानकारी दी। सोहन सिंह बालावत ने कार्यक्रम का संचालन किया।

ऋतु कंवर का वायु सेना में तकनीकी अधिकारी के पद पर चयन

सीकर जिले के दूजोद गांव की निवासी ऋतु कंवर पुत्री गजेंद्र सिंह का वायु सेवा में तकनीकी अधिकारी के पद पर चयन हुआ है। उन्होंने अपना मूलभूत प्रशिक्षण हैदराबाद से पूरा किया है तथा वर्तमान में बेंगलुरु में तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। वे प्रारंभ से श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़ी हैं एवं उन्होंने संघ के पांच प्रशिक्षण शिविर किए हैं।

डॉ. महक राठौड़ ने प्राप्त किया एमएस पीजी में गोल्ड मैडल

नागौर जिले के लाछडी गांव की निवासी डॉ. महक राठौड़ पुत्री आशु सिंह राठौड़ ने गीतांजलि मेडिकल कालेज उदयपुर से प्रसूति एवं स्त्रीरोग एमएस (पीजी) की डिग्री गोल्ड मैडल के साथ प्राप्त की है। वे 2017 में मिस राजस्थान भी रह चुकी है। इनके पिता आशु सिंह राठौड़ (एवीएसएम) रक्षा मंत्रालय के अधीन सीमा सड़क संगठन में उप निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। महक के पति एमडी (मेडिसिन) में गोल्ड मैडलिस्ट हैं।

कल्पना कंवर उपखंड अधिकारी द्वारा सम्मानित

अजमेर जिले के ढिगारिया गांव की निवासी कल्पना कंवर पुत्री भगवान सिंह को 12 कक्षा में अरांई तहसील में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उपखंड अधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया। कल्पना ने 12वीं कक्षा में 94.40 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

प्रेम सिंह रूणिजा बने दिल्ली मेट्रो में अतिरिक्त महाप्रबंधक

नागौर जिले के रूणिजा गांव निवासी प्रेम सिंह राठौड़ दिल्ली मेट्रो रेलवे निगम में अतिरिक्त महाप्रबंधक (AGM) के पद पर पदोन्नत हुए हैं। इससे पूर्व वे निगम में संयुक्त महाप्रबंधक (JGM) के रूप में सेवाएं दे रहे थे।

डॉ. नीतू राठौड़ को मिली डॉक्टरेट की उपाधि

राजकीय महिला इंजीनियरिंग कॉलेज, अजमेर में, असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत डॉ. नीतू राठौड़ को महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर द्वारा 'राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र में महिला उद्यमियों पर एक अध्ययन' विषय में डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गयी है। नीतू राठौड़ श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक छुट्टन सिंह दाबड़दुम्बा की पुत्री हैं एवं उनके पति नरेंद्र सिंह शेखावत (सुल्ताना) मर्चेंट नेवी में कप्तान के पद पर कार्यरत हैं।

किशन सिंह जसोल बने चौपासनी शिक्षा समिति के अध्यक्ष

बाड़मेर के जसोल गांव के निवासी किशन सिंह जसोल चौपासनी शिक्षा समिति जोधपुर के अध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं। किशन सिंह भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के सेवानिवृत्त अधिकारी है।

प्रो. वंदना सिंह बनी पूर्वांचल की कुलपति

प्रोफेसर वंदना सिंह जौनपुर स्थित वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विवि की कुलपति नियुक्त हुई हैं। वे पूर्वांचल विश्वविद्यालय की 19वीं कुलपति होंगी तथा उनका कार्यकाल तीन वर्ष का होगा। प्रोफेसर वंदना सिंह वर्तमान में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान विभाग में प्रोफेसर के पद पर हैं।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	07.09.2023 से 10.09.2023 तक	**गुरुग्राम,** हरियाणा।
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	16.09.2023 से 19.09.2023 तक	**ढींगसरी,** बीकानेर।
03.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.09.2023 से 25.09.2023 तक	**राजपूत छात्रावास,** तारानगर, चुरू। **सम्पर्क सूत्र:** 9672781699, 9509263585, 9660363445
04.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.09.2023 से 25.09.2023 तक	**राजपूत छात्रावास,** प्रतापगढ़।
05.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**आलोक आश्रम,** बाड़मेर
06.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**बनाड़,** जोधपुर।
07.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**जाखण,** जिला-जोधपुर।
08.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**रणसीसर,** जिला-जोधपुर।
09.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**डेरिया,** जिला-जोधपुर। **नोट:** पिछले अंक में इस शिविर को 27.09.2023 से 30.09.2023 कर दिया गया। अब समय बदला गया है।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**भालीखाळ,** जिला-बाड़मेर।
11.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**करीरी,** जिला-जयपुर।
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**तामड़िया,** जिला-जयपुर।
13.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.09.2023 से 26.09.2023 तक	**रूपनगढ़,** जिला-अजमेर।
14.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	29.09.2023 से 02.10.2023 तक	**शिवमंदिर,** नागदा बारां।
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	29.09.2023 से 02.10.2023 तक	**आसीन्द,** भीलवाड़ा।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

आलोक आश्रम (बाड़मेर) में स्नेहमिलन संपन्न

माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में 16 अगस्त को बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में बाड़मेर शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों के स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

संरक्षक श्री के निर्देशन में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह को लेकर बाड़मेर संभाग में हो रही तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। बाड़मेर संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली ने संभाग में अभी तक हुए संपर्क व प्रचार-प्रसार की गति की समीक्षा की व आगे के लिए कार्ययोजना पर चर्चा करते हुए लक्ष्य निर्धारित किए एवं तदनुरूप दायित्व सौंपे।

डेल्हा जी स्मृति समारोह की तैयारी बैठक

श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा पूज्य तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आगामी 24 सितंबर को जैसलमेर के झाबरा में आयोजित होने जा रहे डेल्हा जी स्मृति समारोह की पूर्व तैयारियों को लेकर 20 अगस्त को चांधन स्थित आईनाथ जी के मंदिर में आयोजन समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में समारोह को लेकर विभिन्न जिम्मेदारियां विभिन्न गांवों के कार्यकताओं को सौंपी गई। श्रद्धालुओं हेतु प्रसादी की व्यवस्था साँवला गांव द्वारा ली गई। टेंट व्यवस्था चांधन, जल- पान व्यवस्था भैरवा, साउंड सिस्टम सोढाकोर व प्रचार-प्रसार सामग्री की व्यवस्था

डेलासर गाँव द्वारा ली गई। बैठक में एक कार्यकारिणी का गठन किया भी गया जो समारोह का की तैयारियों व प्रचार प्रसार की समीक्षा करेगी।

स्व. हरिसिंह पांचला की स्मृति में रक्तदान शिविर

पांचला निवासी स्वर्गीय हरिसिंह भाटी की स्मृति में 15 अगस्त को उनके जन्मदिवस पर मारवाड़ राजपूत सभा भवन जोधपुर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में हरिसिंह के मित्रों व परिचितों ने 125 यूनिट रक्तदान किया। इस अवसर पर पूर्व राज्यसभा सदस्य पद्मश्री नारायणसिंह माणकलाव ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि रक्तदान मानवता के हित में हम सबका कर्तव्य है। इसे अभियान के रूप में लेकर मानव हित में सहयोगी बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोगों में रक्तदान के प्रति जागरूकता की कमी के कारण ब्लड बैंको में रक्त की भारी कमी रहती है। इसलिए समाज में रक्तदान के प्रति फैली भ्रांतियों को दूर करके हम सबको अधिकाधिक लोगों को जागरूक करना चाहिए। सभी ने स्व. हरिसिंह के चित्र के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित की। उम्मेद हॉस्पिटल ब्लड बैंक, मथुरादास माथुर ब्लड बैंक व जोधपुर ब्लड बैंक की टीमों ने रक्त संग्रहण का कार्य किया।

दुगोली में राव रतनसिंह जोधा फाउंडेशन की बैठक संपन्न

जायल क्षेत्र के दुगोली गांव में राव रतनसिंह जोधा फाउंडेशन की बैठक 20 अगस्त को आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता तेजराज सिंह दुगोली ने की। बैठक में खिंयाला रोड पर राव रतन सिंह के स्मारक के निर्माण पर चर्चा हुई, साथ ही समाज हित में संस्थान द्वारा किए जाने योग्य अन्य कार्यों पर भी विमर्श हुआ। विजयराज सिंह दुगोली, हनुमान सिंह कालवी, गोपाल सिंह कसनाऊ, सुरेंद्र सिंह तंवरा सहित अन्य समाजबंधु बैठक में उपस्थित रहे।

क्षत्रिय महासंघ भारत का दो दिवसीय अधिवेशन कनखल में संपन्न

हरिद्वार के कनखल में स्थित श्री राजपूत धर्मशाला में क्षत्रिय महासंघ भारत का दो दिवसीय अधिवेशन 12-13 अगस्त को आयोजित हुआ। अधिवेशन में 14 राज्यों से आए प्रतिभागी सम्मिलित हुए। संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैप्टन सुरेश सिंह परमार ने बताया कि अधिवेशन का मुख्य उद्देश्य क्षत्रिय समाज के चहुंमुखी विकास के लिए एकता स्थापित करने एवं राष्ट्र के विकास में समाज की भूमिका पर चिंतन करना रहा। क्षत्रिय वंश के रीति रिवाज, भाषा, पूजा पद्धति, विवाह पद्धति आदि को नवीन वैज्ञानिक आधारों पर स्वीकार करने के संबंध में भी चिंतन व चर्चा हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृपाल सिंह चौहान द्वारा की गई। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि क्षत्रिय समाज ही राष्ट्र को उच्च शिखर पर ले जाने में सक्षम है। अनिल पुंडीर एडवोकेट, महेंद्र परमार, कुंवर संजीव कुशवाहा आदि ने भी अपने विचार रखे।

कैप्टन चेतन सिंह शेखावत सेना वीरता पदक से सम्मानित

हरियाणा के हिसार जिले के बड़वा गांव निवासी कैप्टन चेतन सिंह शेखावत को 77वें स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रपति द्वारा सेना वीरता पदक से सम्मानित किया गया। कैप्टन चेतन सिंह ने कुलगाम (कश्मीर) में दो दुर्दांत आतंकवादियों को मार गिराया था। हरियाणा सरकार ने उन्हें उनकी वीरता के लिए 21 लाख रुपए पुरस्कार स्वरूप प्रदान करने की घोषणा भी की है।

(पृष्ठ एक का शेष)

इतिहास... यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारे इतिहास को कोई चोरी नहीं कर पाएगा। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास ने 24 अगस्त को केकड़ी के बघेरा स्थित सूरज पैराडाइज में आयोजित राव चंद्रसेन जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि राव चंद्रसेन जैसे पूर्वजों के कारण ही हमारी उपयोगिता समाज में बनी रही। किसी भी वस्तु की उपयोगिता पर ही उसका अस्तित्व निर्भर करता है। जब तक हमने अपनी उपयोगिता बनाए रखी तब तक लोगों ने हमें सम्मान दिया, अपने सिर पर धारण किया लेकिन जैसे ही हमने अपनी उपयोगिता खो दी वैसे ही उन्होंने अपने सिर से हमें उतार फेंका। अपनी उस उपयोगिता को पुनः सिद्ध करके ही हम अपने खोए गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें उसके लिए मार्ग प्रदान करता है लेकिन उस मार्ग पर चलने के लिए हमें अपने आपको मिटाना होगा, अपने अहंकार को त्यागना होगा। पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त श्री राव चंद्रसेन स्मृति संस्थान द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि राव चंद्रसेन जी के गुणों को अपने जीवन में चरितार्थ करने की आवश्यकता है। यही उनके प्रति सच्ची कृतज्ञता होगी। ऐसे स्वाभिमानी नायकों की कहानी सभी तक पहुंचे इसके लिए ऐसे कार्यक्रमों का निरंतर आयोजन किया जाना चाहिए। उन्होंने सामाजिक एकता बनाए रखने और मिलकर समाज और राष्ट्र की सेवा में सहयोग देने की बात कही। पूर्व राज्यसभा सांसद ओंकार सिंह लखावत ने राव चंद्रसेन जी व राठौड वंश के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं राव चंद्रसेन जी के वंशजों के गांवों में चंद्रसेन जी की अधिकतम मूर्तियां स्थापित हों, इसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता बताई। राव चंद्रसेन स्मृति न्यास के सचिव वीरेंद्र सिंह बांदनवाड़ा ने न्यास का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और बताया कि स्वर्गीय राजा कल्याण सिंह भिनाय के समय चंद्रसेन जी की जयंती मनाई जानी प्रारंभ हुई। 1991 से भिनाय और बांदनवाड़ा में श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में जयंती मनाना शुरू किया गया। तत्पश्चात स्व. रघुवीर सिंह बांदनवाड़ा न्यास का गठन करके उसके द्वारा जयंती मनाई जाती है। उसी कड़ी में आज का आयोजन भी हो रहा है। वीरभद्र सिंह बघेरा ने सभी का स्वागत किया। संघ के अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। न्यास के अध्यक्ष राव हरेंद्र सिंह बांदनवाड़ा द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। मंच संचालन भंवर सिंह देवगांव ने किया। कार्यक्रम में बांदनवाड़ा, भिनाय, विजयनगर, सरवाड़, सावर, केकड़ी, टोडा रायसिंह, कादेड़ा, जूनिया, बघेरा आदि क्षेत्रों के समाजबंधु मातृशक्ति सहित उपस्थित रहे।

पूर्वज... हम सभी को अपना मानेंगे तो लोग अवश्य हमारे साथ खड़े होंगे। हमें स्वार्थ छोड़कर परिवार, समाज, देश और समस्त मानवता के हित में कार्य करना होगा, तभी जाकर हम इस लोकतंत्र में अपनी समुचित भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे। इससे पूर्व श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषंगिक संगठन के रूप में श्री प्रताप फाउंडेशन के उद्देश्य के बारे में बताते हुए वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में समाज सापेक्ष राजनीतिक व्यवहार को अपनाने के तरीकों की जानकारी दी। कार्यक्रम में सुमेर सिंह गुढा, पवन सिंह कुसुमदेसर, भगीरथ सिंह घुमान्दा, कल्याणसिंह मेलुसर, हिम्मत सिंह मालसी, जगजीत सिंह पड़िहारा, अर्जुन सिंह फ्रांसा आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन राजेन्द्र सिंह आलसर ने किया।

(पृष्ठ दो का शेष)

देश की...

लेकिन आज हमारे वे संस्कार खो गए हैं, वह शिक्षा खो गई है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ अपनी शाखाओं व शिविरों के माध्यम से वह शिक्षा दे रहा है।

केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसी दिन शाम को चितौड़गढ़ में आसावरा माताजी स्थित भवानी क्षत्रिय धर्मशाला में भी दुगार्दास जी की जयंती मनाई गई जिसमें संघप्रमुख श्री ने कहा कि महापुरुषों की जयंतियां मनाना तभी सार्थक है जब हम उनसे प्रेरणा लेकर नई चेतना अपने में भरें। हमारे समाज की वह चेतना खो गई है जो हमें अपने कर्त्तव्य का, अपने उत्तरदायित्व का, अपने धर्म का भान कराती थी। उसी चेतना को पुनः समाज में जगाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ कार्य कर रहा है। मेवाड़ मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया। जयपुर शहर प्रांत द्वारा संघशक्ति कार्यालय परिसर में राष्ट्रनायक की जयंती बनाई गई। माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने उपस्थित समाजबंधुओं व स्वयंसेवकों से दुगार्दास जी के चरित्र का अनुकरण करने की बात कही। केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने 'क्षिप्रा के तीर' आलेख का पठन किया। बीकानेर जिले के श्रीडूंगरगढ़ में स्थित महेशभवन में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने राष्ट्रनायक दुगार्दास राठौड़ के जीवन व्यवहार को भगवान राम और कृष्ण के सदृश बताते हुए उनके दायित्वबोध, युद्धकुशलता, राजनीतिक समझ, चारित्रिक श्रेष्ठता, स्वामीभक्ति आदि गुणों का सोदाहरण वर्णन किया। उन्होंने दुगार्दास जी के उज्ज्वल चरित्र और व्यक्तित्व से प्रेरणा लेते हुए उनके गुणों को अपने जीवन व्यवहार में ढालने का निवेदन किया। शक्ति सिंह आशापुरा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का संक्षिप्त परिचय दिया। प्रभू सिंह आसरासर ने वीर दुगार्दास राठौड़ का जीवन चरित्र प्रस्तुत किया। साहित्यकार डॉ. चेतन स्वामी ने दुगार्दास राठौड़ तथा क्षत्रिय जाति की चारित्रिक विशेषताओं के बारे में बताया। वरिष्ठ स्वयंसेवक एडवोकेट भरतसिंह सेरूणा ने सभी को पूज्य तनसिंहजी जन्मशताब्दी समारोह के लिए 28 जनवरी को दिल्ली आने के लिए आमंत्रित किया। क्षत्रिय महासभा तहसील अध्यक्ष छैलूसिंह शेखावत ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर ने किया। जोधपुर स्थित संभागीय कार्यालय तनायन में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ।

दुगार्दास जी के पैतृक गाँव व जन्म स्थान सालवा कल्ला में उनके स्मारक पर श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा लगाकर स्वयंसेवकों द्वारा जयंती मनाई गई। जोधपुर संभाग में बापिनी, नाहर सिंह नगर, खारिया खंगार, गोपालसर और जय भवानी नगर में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। पूर्वी राजस्थान सम्भाग के दौसा प्रांत में महुआ राजपूत छात्रावास में जयंती मनाई गई जिसमें सम्भाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया ने दुगार्दास जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला और उनकी संघर्ष प्रियता, देशभक्ति, संगठन क्षमता और क्षत्रियत्व के बारे ने बताया। सरजीत सिंह खेड़ली, प्रयाग सिंह (अध्यक्ष महुआ राजपूत समाज), हरिशंकर सिंह केसरा (महामंत्री) ने भी अपने विचार रखे। प्रांतप्रमुख नानू सिंह रुखासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। दौसा प्रांत के बेहडखो में भी जयंती बनाई गई जिसमें सम्भाग प्रमुख व प्रांत प्रमुख सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बाड़मेर संभाग के शिव प्रान्त की मातेश्वरी शाखा, भिंयाड़ में दुगार्दास राठौड़ की जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई। शिव प्रान्त प्रमुख राजेन्द्र सिंह भिंयाड़ द्वितीय ने कहा कि दुगार्दास जी का नाम मारवाड़ ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के इतिहास में त्याग, बलिदान, देश-भक्ति व स्वामिभक्ति के लिये स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। उपस्थित स्वयंसेवकों ने दुगार्दास जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। हरीश जाँगिड़ ने मिट्टी की कलाकृति से दुगार्दास जी के नाम को उकेरा। बाड़मेर सम्भाग के चौहटन प्रांत के सेडवा मण्डल मे भूपाल शाखा मैदान (श्री भूपाल स्कूल) गंगासरा में भी जयंती मनाई गई। वीर सिंह गंगासरा, मोहन सिंह गंगासरा सहित अन्य स्वयंसेवकों ने दुगार्दास जी को पुष्पांजलि अर्पित की व उनकी संघर्षप्रियता व देशभक्ति को नमन किया।

सम्भाग के गुड़ामालानी प्रांत में शाखा मैदान बूठ में जयंती मनाई गई। स्वरूप सिंह बूठ ने दुगार्दास जी के संघर्षपूर्ण जीवन का विस्तार से वर्णन किया। प्रांत प्रमुख गणपत सिंह बूठ ने दुगार्दास जी को आदर्श संगठनकर्ता, स्वामीभक्त, राष्ट्ररक्षक और समस्त क्षत्रियोचित गुणों से परिपूर्ण आदर्श क्षत्रिय बताया। गुड़ामालानी प्रांत के मीठड़ा, हाथीतला आदि गांवों में भी शाखा स्तर पर जयंती मनाई गई। शेखावाटी संभाग में चूरू जिले के राजलदेसर में भी जयंती मनाई गई। संभाग प्रमुख खींव सिंह सुलताना ने दुगार्दास जी का जीवन परिचय देते हुए उनसे प्रेरणा लेने की बात कही तथा सभी को दिल्ली में आयोजित होने वाले जन्म शताब्दी समारोह का न्यौता दिया। प्रान्तप्रमुख राजेन्द्र सिंह आलसर ने श्री क्षत्रिय युक संघ का संक्षिप्त परिचय दिया। चूरू प्रांत के भूकरका और नुवां गांव में भी जयन्ती कार्यक्रम रखे गए। बीकानेर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में मां सा मोती कंवर बालिका शाखा द्वारा जयंती मनाई गई। सीकर स्थित श्री कल्याण राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई। केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने दुगार्दास जी का जीवन चरित्र बताया। जुगराज सिंह जुलियासर द्वारा पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित 'होनहार के खेल' पुस्तक से 'क्षिप्रा के तीर' आलेख का पठन किया गया। रिटायर्ड आर एस अधिकारी सज्जन सिंह ने भी अपने विचार रखे। संचालन सुरेन्द्र सिंह तंवरा ने किया। सिरोही जिले में सिरोड़ी स्थित जुंझार बावजी प्रताप सिंह के थान पर जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। दुगार्दास का जीवन परिचय राजवर्धन सिंह पीथापुरा द्वारा दिया गया। प्रधानाचार्य अशोक सिंह पीथापुरा, हिम्मत सिंह पीथापुरा, भवानी सिंह भटाना, दलपत सिंह नागानी, भागीरथसिंह लूणोल आदि ने भी अपने विचार रखे। सिरोही जिले के लूणोल स्थित महादेव मंदिर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। बालोतरा संभाग में वीर दुगार्दास राठौड़ पोल छप्पन की पहाड़ियां हल्देश्वर, वीर दुगार्दास छात्रावास बालोतरा, सेवनियाला, टापरा, गोगासर जाजवा, चांदेसरा, चिड़िया, कुंडल और वीर दुगार्दास छात्रावास समदड़ी में राष्ट्रनायक दुगार्दास जी की जयंती मनाई गई। सोजत मण्डल के बगड़ी नगर स्थित राव जैताजी संस्थान में भी जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें बहादुर सिंह सारंगवास, राव जैताजी संस्थान के अध्यक्ष भगवत सिंह, नरपतसिंह, सज्जन सिंह देवली सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। लाडनू प्रांत के परावा गांव में भी जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी ने कहा कि दुगार्दास जी ने अपने जीवन में त्याग का जो उदाहरण पेश किया उस त्याग की आज समाज में बहुत ज्यादा आवश्यकता है। उन्होंने पूज्य श्री तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में भी जानकारी दी। अजमेर के सरवाड़ में क्षत्रिय सभा के तत्वावधान में जयंती मनाई गई। कर्नल रघुवीर सिंह राठौड़ ने कहा कि समाज की युवा शक्ति को दुगार्दास राठौड़ से संघर्ष और देशभक्ति की प्रेरणा लेनी चाहिए। कार्यक्रम में केकड़ी प्रधान होनहार सिंह राठौड़, शैलेंद्र सिंह शक्तावत, अंबिका चरण सिंह, वीरभद्र सिंह, गोपाल सिंह कादेडा ने भी अपने विचार रखे।

टोंक जिले के नटवाडा गांव में भी दुगार्दास जी की जयंती मनाई गई। एडवोकेट तेज भंवर सिंह नटवाडा सहयोगियों के साथ उपस्थित रहे।

बलबीर सिंह हाथोज को दी श्रद्धांजलि

श्री राजपूत सभा के महामंत्री के रूप में लंबे समय तक सेवाएं देने वाले बलबीर सिंह हाथोज के असामयिक निधन पर श्री क्षत्रिय सभा केकड़ी द्वारा 13 अगस्त को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा के कार्यकताओं ने स्थानीय समाजबंधुओ के साथ उपस्थित रहकर श्री हाथोज को श्रद्धांजलि दी। श्री राजपूत सभा जयपुर की महूकलां गंगापुर सिटी इकाई द्वारा भी 20 अगस्त को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

स्व. दशरथ सिंह सापणदा की पत्नी का निधन

पुष्पा कंवर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक स्वर्गीय दशरथ सिंह जी सापणदा की धर्मपत्नी **पुष्पा कंवर** का देहावसान 15 अगस्त को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

स्व. रतन सिंह नंगली की पत्नी का देहावसान

जसवंत कंवर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक स्वर्गीय रतन सिंह जी नंगली की धर्मपत्नी **जसवंत कंवर** का देहावसान 26 अगस्त 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

भवानी सिंह कांकरिया का देहावसान

भवानी सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **भवानी सिंह जी कांकरिया** का देहावसान 27 अगस्त 2023 को हो गया। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के कुल 28 शिविर किए जिनमें 10 उच्च प्रशिक्षण शिविर, 11 माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर एवं 7 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्मिलित हैं। भिणाय में 15 से 30 मई 1956 तक आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर उनका पहला शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

जयेंद्र सिंह पालज को पितृशोक

जयेंद्र सिंह पालज

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **जयेंद्र सिंह पालज** के पिता श्री अर्जुन सिंह का देहावसान 24 अगस्त 2023 को 75 वर्ष की आयु में हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

अंत:करण में ज्ञान का दीपक जलाना ही वास्तविक शिक्षा: संरक्षक श्री

(समारोह पूर्वक हुआ नागौर स्थित श्री अमर राजपूत छात्रावास के मुख्य द्वार का लोकार्पण)

नागौर के अमर सिंह राठौड़, जिनके नाम पर यह छात्रावास बना है, उनके समान ही हमारे समाज में अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने ईश्वरीय भाव रखते हुए अपने क्षात्रधर्म का पालन किया है। वे जन्म से ही नहीं कर्म से भी क्षत्रिय रहे हैं। 'क्षतात त्रायते इति क्षत्रिय' इस बात को समझते हुए हमारे पूर्वजों ने केवल राज नहीं किया बल्कि अपना कर्तव्य पालन करते हुए जनसेवा की। परन्तु पिछले एक हजार वर्ष से निरन्तर हमने बाहर से आए बर्बर लोगों से संघर्ष किया। उसके बाद अंग्रेजों ने आकर भारत को गुलाम बनाया और भारत के धर्म, संस्कृति और इतिहास को नष्ट करने की नीतियां बनाई। आजादी के बाद भी अंग्रेजों की शिक्षा नीति से शिक्षित लोगों ने ही देश का शासन संभाला और उसी का परिणाम है कि आज हमारे पास कुछ भी मौलिक नहीं है। ना कोई मौलिक राष्ट्रीय नीति है, ना विदेश नीति है, ना कोई शिक्षा नीति है, ना कोई कृषि नीति है। जो अंग्रेजों ने दिया उसी को लेकर हम अभी तक चल रहे हैं। भारतवर्ष सदैव से धर्म परायण देश रहा है लेकिन अब भारत में धर्म की शिक्षा नहीं मिल रही, केवल रोजगार की, पेट की शिक्षा मिल रही है। शिक्षा का उद्देश्य आज केवल पैसा कमाना रह गया है। हमारे अंत:करण में जो अंधकार भरा पड़ा है उसको हटाकर ज्ञान का दीपक जलाना ही वास्तविक शिक्षा है। वही शिक्षा देने का काम श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। यही उसका मुख्य कार्य है। दूसरा पक्ष श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य का सामाजिक एकता का है। पूरे समाज को और पूरे देश को एक सूत्र में बांधने के लिए भी संघ कार्य कर रहा है। उपर्युक्त बात श्री क्षत्रिय युवक के संरक्षक माननीय भगवान सिंह रोलसाहबसर ने नागौर के श्री अमर राजपूत छात्रावास के मुख्य द्वार के लोकार्पण के अवसर पर आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हमें अपने आप को टटोलना होगा कि क्या हम हमारे क्षात्रधर्म के अनुरूप कार्य कर रहे हैं। जो अपने इतिहास को भूल जाता है वो सब कुछ भूल जाता है। हमें अपने इतिहास से प्रेरणा लेकर अपने क्षात्र भाव को जागृत करना होगा। पूज्य तनसिंह जी ने आजादी से पूर्व ये अनुभव किया और इसीलिए उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। 26 अगस्त को पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजित इस कार्यक्रम में संरक्षक श्री ने छात्रावास के मुख्य द्वार का लोकार्पण करने के साथ ही द्वार का निर्माण करवाने वाले विजय प्रताप सिंह आकेली व उनके परिजनों का सम्मान भी किया। छात्रावास के प्रतिभावान छात्रों को भी सम्मानित किया गया। छात्रावास समिति के सचिव देवेंद्र सिंह द्वारा छात्रावास की गतिविधियों व व्यवस्था के बारे में बताया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के नागौर संभाग प्रमुख व साधना संगम संस्थान के शिम्भु सिंह आसरवा ने पूज्य तनसिंह जी का जीवन परिचय देते हुए बताया कि किस प्रकार समाज की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानते हुए उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की जो पिछले 77 वर्ष से अहर्निश क्षात्र धर्म की अलख घर-घर में जगाने का प्रयास कर रहा है। नागौर प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त होने वाली गतिविधियों के बारे में बताया। विजय प्रताप सिंह आकेली ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन जय सिंह सागु बड़ी ने किया।

गाजियाबाद में अखंड राजपूताना सेवा संस्थान की बैठक संपन्न

अखंड राजपूताना सेवा संस्थान (पंजीकृत दिल्ली) की कार्ययोजना बैठक 20 अगस्त को गाजियाबाद के वसुंधरा क्षेत्र में स्थित रेडिसन होटल में आयोजित की गई। बैठक में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की मूर्ति लगाने के संबंध में चर्चा हुई। सभी की सहमति से क्षेत्रवार समितियां बनाई गईं जो संस्था के प्रमुख उद्देश्य (मूर्ति स्थापना) को पूरा करने के लिए धन संग्रह करेंगी। समितियों के सदस्यों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में इसके लिए संपर्क किया जाएगा और संस्था में अधिक से अधिक राजपूत परिवारों को जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष केपी सिंह की अध्यक्षता में हुई इस बैठक का संचालन मीडिया प्रभारी एसपी चौहान ने किया। बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि अगली बैठक में संगठन का पुनर्गठन किया जाए। संगठनात्मक चुनाव के लिए रूपरेखा भी तैयार की गई। संस्था के अध्यक्ष के तौर पर पुनः केपी सिंह को, महासचिव के रूप में पुनः वीपी सिंह को एवं कोषाध्यक्ष के पद पर निशा तंवर के निधन के कारण सुप्रिया सिंह भदौरिया को जिम्मेदारी देने का सर्वसम्मति से निर्णय हुआ। उपरोक्त तीनों पदाधिकारी मिलकर शेष कार्यकारिणी का गठन करेंगे।

धंधुका में सरस्वती सम्मान समारोह का आयोजन

गुजरात के धंधुका में 13 अगस्त को श्री चुडासमा राजपूत समाज द्वारा सरस्वती साधना सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह धोलेरा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सरस्वती का अर्थ हमारे द्वारा ग्रहण किए गए ज्ञान से हैं। समाज को आज सच्चे ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान ही हमें हमारे जीवन को सार्थक करने की राह बता सकता है। उन्होंने क्षत्रिय का अर्थ बताते हुए कहा कि जो क्षय से समाज की रक्षा करे, वही क्षत्रिय है। इस क्षत्रियत्व को धारण करने के लिए भी हमें ज्ञानवान बनना पड़ेगा तभी हम अज्ञान से दूसरों की रक्षा कर सकेंगे। पूर्व मंत्री किरीट सिंह राणा ने भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया और उनसे हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का आह्वान किया। संस्थान के अध्यक्ष जयवीर सिंह ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

बेंगलुरु में राजपूत समाज का एक दिवसीय सावन स्नेहमिलन संपन्न

कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर नेलमंगला स्थित धर्मसि रिसोर्ट में राजस्थानी राजपूत समाज का एक दिवसीय सावन माह का स्नेहमिलन कार्यक्रम 20 अगस्त को आयोजित हुआ जिसमें बेंगलुरु शहर में रहने वाले समाजबंधु सम्मिलित हुए। पारंपरिक राजस्थानी राजपूती वेशभूषा में मातृशक्ति की गरिमापूर्ण उपस्थिति भी कार्यक्रम में रही। बेंगलुरु की श्री क्षत्रिय युवक संघ की बालक व बालिका शाखा के स्वयंसेवक व स्वयसेविकाएं भी कार्यक्रम में शामिल हुए। चर्चा के दौरान अपने परिवार के बालक बालिकाओं को संघ की शाखा में भेजने पर सभी ने सहमति जताई। पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए सभी से दिल्ली चलने का निवेदन किया। कार्यक्रम के पश्चात स्नेहभोज भी रखा गया।

बैगलूरू

संघशक्ति में उल्लास के साथ मनाया तीज का त्यौहार

20 अगस्त को जयपुर स्थित संघशक्ति कार्यालय में जयपुर शहर में रहने वाली महिलाओं ने हरियाली तीज का त्यौहार उल्लासपूर्वक मनाया। अखंड सौभाग्य और पति की दीर्घायु के लिए प्रतिवर्ष श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को निर्जला व्रत रखते हुए यह तीज मनाई जाती है। यह भगवान शिव और मां पार्वती की अराधना करने का विशेष दिन भी माना जाता है।

संघशक्ति

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org